This question paper contains 3 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper: **2349** **HC**

Unique Paper Code : **62051104**

Name of Paper : **M.I.L.; Hindi Bhasha Aur Sahitya Hindi (C)**

Name of Course : **B.A. (Prog.) CBCS**

Semester : **I**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की फलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल-फल कर, मैं मोटा सेठ बनूँगा!
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने एक भी पैसा न उगला।
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए!

अथवा

करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो

P. T. O.

बनता वस उद्‌यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो !

(ख) अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलै तजि आपुनपौ झझकै कपटी जे निसाँक नहीं।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ इत एक तें दूसरों आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

अथवा

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सौं बात।।

(ग) कबीर संगति साध की, कदे न निरफल होइ।
चंदन होसी बाँवना, नीब न कहसी कोइ।।

अथवा

मैया मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरैं मुख लपटायौ।
देखि तुहीं सींके पर भाजन, ऊँचे धरि लटकायौ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपनैं मैं कैसें करि पायौ।।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्हीं, दोना पीठि दुरायौ।
डारि साँटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ।

10×3=30

2. सुमित्रानंदन पंत **अथवा** मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

3. घनानंद के पदों में वर्णित प्रेम-भाव का वर्णन कीजिए।

अथवा

बिहारी की शृंगार-भावना का निरूपण कीजिए। 10

4. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'ऊधो मन न भए दस बीस'— के आधार पर गोपियों की विरह-भावना का वर्णन कीजिए। 10

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

(ख) हिंदी का भौगोलिक विस्तार

(ग) आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ

(घ) भक्ति काल का महत्त्व

(च) भारतेन्दु युग की विशेषताएँ

(छ) छायावाद की विशेषताएँ। $5 \times 3 = 15$